अन्य जानकारियाँ

- पंजीयन की अंतिम तिथि 20 फरवरी, 2018 निश्चित की गई है।
- पंजीयन की नियत तिथि के पश्चात आवास व्यवस्था प्रतिभागी को स्वयं अपने स्तर पर करनी होगी।
- संभागियों को किसी प्रकार का यात्रा-भत्ता आदि देय नहीं होगा।
- आलेख कृतिदेव-10 या मंगल यूनिकोड में टंकित होने चाहिए।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन कराना अनिवार्य होगा।
- आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।

संपर्क :

प्रो. माधव हाड़ा
अध्यक्ष : हिंदी विभाग
09414325302

डॉ. नीतू परिहार - 09413864055

डॉ. नवीन नंदवाना - 09828351618

डॉ. आशीष सिसोदिया - 09414851055

डॉ. राजकुमार व्यास - 09928788995

डॉ. नीता त्रिवेदी - 09950960999

दूरभाष : +91294 2470143, 2470509
Ext.: 3202
ई-मेल : hindimlsu@gmail.com

आधार विचार

समकालीन रचनात्मकता में उसकी परंपरा और विरासत का अनिवार्य और निर्णायक योग रहता है। कोई रचनात्मकता अपनी परंपरा और विरासत से विच्छिन्न होकर नहीं होती। हिंदी की आधुनिक रचनात्मकता ने उपनिवेशकाल में अपनी आँखें खोलीं, लेकिन उसमें अपनी विरासत की स्मृति और संस्कार निरंतर है। अब यह वयस्क होकर समृद्ध और विविध भी हो गई है और इसमें अपनी जड़ों की ओर लौटने का आग्रह निरंतर बढ़ रहा है। यह विडम्बना ही है कि परंपरा और विरासत की चेतना के बहुत प्रखर और मुखर हो जाने के बावजूद भी हिंदी में इसकी पहचान का कोई उपक्रम अभी तक नहीं हुआ है। प्रस्तावित संगोष्ठी समकालीन हिंदी रचनात्मकता में उसकी परंपरा और विरासत की स्मृति और संस्कारों की पहचान और मूल्यांकन के लिए आयोज्य है।

विचार सत्र

हमारी परंपरा, विरासत और साहित्य
हिंदी की समकालीन कविता और हमारी विरासत
हिंदी का समकालीन कथा साहित्य और हमारी विरासत
हिंदी की समकालीन आलोचना और हमारी विरासत
हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ और हमारी विरासत

पंजीयन

- अध्यापकों और शोधार्थियों के लिए पंजीयन शुल्क : रु.1000/- (आवास व्यवस्था 500 रु अतिरिक्त)
- पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकता है अथवा Head, Department of Hindi, M.L.S. University, Udaipur, Raj. के नाम से चेक या डी.डी. द्वारा भेजा जा सकता है अथवा सीधे ICICI Bank खाता संख्या 694201437677 IFSC Code– ICIC0006942 में भी जमा कराया जा सकता है।
- सीधे बैंक में राशि जमा कराने की स्थिति में बैंक रसीद पंजीयन प्रपत्र के साथ अवश्य भेज दें।

हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
एवं
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
का संयुक्त आयोजन

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी की समकालीन रचनात्मकता और हमारी विरासत

27 एवं 28 फरवरी, 2018

सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं हिंदी विभाग

विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की संघटक इकाई है। विश्वविद्यालय राज्य का पहला विश्वविद्यालय है, जिसको राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद् (नेक) ने 'ए' श्रेणी प्रदान की है। विभाग देश के पुराने और प्रतिष्ठित हिंदी विभागों में से एक है। हिंदी साहित्य के उन्नयन और प्रचार-प्रसार में इसकी निर्णायक भूमिका है। यह निरंतर सक्रिय विभाग है। संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और व्याख्यानों के माध्यम से इसने अपनी अलग पहचान बनाई है।

अपनी स्थापना से ही विभाग शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विभाग संकल्पवान है। यह विभाग सूचना प्रोद्यौगिकी का शिक्षा एवं शोध के स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं की दृष्टि से भी समृद्ध है।

उदयपुर दक्षिणी राजस्थान का ऐतिहासिक नगर है। यह नगर अपने भव्य सांस्कृतिक अतीत, ऐतिहासिक इमारतों और झीलों के लिए विख्यात है। चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी, नाथद्वारा आदि कई पर्यटन स्थल उदयपुर के पास स्थित हैं। उदयपुर हवाई और रेल यातायात से जुड़ा हुआ है।

राजस्थान साहित्य अकादमी

राजस्थान साहित्य अकादमी राजस्थान सरकार का स्वायत्तशासी उपक्रम है, जिसकी स्थापना 28 जनवरी, 1958 को हुई। यह संस्था राजस्थान में हिंदी साहित्य के उन्नयन और प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पित है। अकादमी के प्रयत्नों से राज्य में साहित्यिक वातावरण बना है और इसने यहां के रचना कर्म को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अकादमी साहित्यिक आयोजन, प्रकाशन, पुरस्कार आदि कई गतिविधियां संचालित करती है। अकादमी का मुख्यालय उदयपुर में है।